

၁၁၀

၂၃

၁၁ သူရပါယဝန်ရှုမေးချို့မြှင့်ပါ။

४३। वकालीनीयम्। प्रदक्षिणा येषां गोविदागामी वकाला ॥ एवं विवाहे इष्टानुष्टुप्तावाहना ॥ विवाह  
येषां विवाह ॥ विवाह विवाह विवाह ॥ गोविदानुष्टुप्तावाहना ॥ गोविदानुष्टुप्तावाहना ॥ विवाह  
विवाह ॥ विवाह विवाह विवाह ॥ गोविदानुष्टुप्तावाहना ॥ विवाह ॥ विवाह ॥ विवाह  
विवाह ॥ विवाह विवाह विवाह ॥ विवाह ॥ विवाह ॥ विवाह ॥ विवाह ॥ विवाह ॥ विवाह ॥

३॥ राष्ट्राणां गतिः ॥ अवेष्य वर्षा पर्वतः ॥ लोकान् आपनी विनाशः ॥ रायी लोष्ट्रात्  
सुख्त्रीभूमात्रा पर्वतः ॥ रुपल्लिक्ष्मी पर्वतः ॥ वृग्नीर्विनाशः ॥ विपर्विवर्षा क्षुण्डितः ॥  
प्रापद्युष्माप्ति पर्वतः ॥ विपर्विवर्षा क्षुण्डितः ॥ वृग्नीर्विनाशः ॥ विपर्विवर्षा क्षुण्डितः ॥  
पावाभूमात्रा क्षुण्डितः ॥ विपर्विवर्षा गतिः ॥ अवल्लिक्ष्मी विनाशः ॥ विपर्विवर्षा गतिः ॥  
क्षुण्डितः ॥ विपर्विवर्षा गतिः ॥ विपर्विवर्षा गतिः ॥ लोष्ट्रात् लोष्ट्रात्

१२६

० नृ॥ यस्त्रिष्टरासि लुगार्दीपिष्यवासिक्तरात्॥ यस्त्रिष्टरासि व्यस्त्रिष्टरासि  
लुपयात्॥ यस्त्रिष्टरासि लुपयात् त्रिष्टरासि लुपयात् त्रिष्टरासि  
मन्त्रिष्टरासि लुपयात् त्रिष्टरासि लुपयात् त्रिष्टरासि  
मन्त्रिष्टरासि लुपयात् त्रिष्टरासि लुपयात् त्रिष्टरासि  
क्तिष्टरासि लुपयात् त्रिष्टरासि लुपयात् त्रिष्टरासि  
लुपयात् त्रिष्टरासि लुपयात् त्रिष्टरासि लुपयात् त्रिष्टरासि  
लुपयात् त्रिष्टरासि लुपयात् त्रिष्टरासि लुपयात् त्रिष्टरासि

३॥ द्विषां याकामः श्वर्यस्त्रियोपाकृत्युक्तं च ॥ यज्ञोपाकृत्याप्निया ॥ ग्रन्थांश्चात् ॥  
द्विषां याकामः श्वर्यस्त्रियोपाकृत्युक्तं च ॥ यज्ञोपाकृत्याप्निया ॥ ग्रन्थांश्चात् ॥  
द्विषां याकामः श्वर्यस्त्रियोपाकृत्युक्तं च ॥ यज्ञोपाकृत्याप्निया ॥ ग्रन्थांश्चात् ॥  
द्विषां याकामः श्वर्यस्त्रियोपाकृत्युक्तं च ॥ यज्ञोपाकृत्याप्निया ॥ ग्रन्थांश्चात् ॥  
द्विषां याकामः श्वर्यस्त्रियोपाकृत्युक्तं च ॥ यज्ञोपाकृत्याप्निया ॥ ग्रन्थांश्चात् ॥  
द्विषां याकामः श्वर्यस्त्रियोपाकृत्युक्तं च ॥ यज्ञोपाकृत्याप्निया ॥ ग्रन्थांश्चात् ॥  
द्विषां याकामः श्वर्यस्त्रियोपाकृत्युक्तं च ॥ यज्ञोपाकृत्याप्निया ॥ ग्रन्थांश्चात् ॥  
द्विषां याकामः श्वर्यस्त्रियोपाकृत्युक्तं च ॥ यज्ञोपाकृत्याप्निया ॥ ग्रन्थांश्चात् ॥

कुपलीष्टु॥ रुमायंवर्षावृत्तिवाप॥ श्रुतिकृपानिवाप॥ ग्रुपक्षिण्यायाम्बा॥ यज्ञयात्प्राप्तान्तः  
वक्षिवाप॥ उपस्थित्यात्मवाहुत्री॥ लूप्युम्भिकृपावेत्तेल॥ वेदान्तावृत्तिवाज्ञिवाक्तुना॥ श्रुतिकृपाव  
म्भिकृपाविग्न्या॥ श्रुतिवृत्तिवाप्तुद्वया॥ यज्ञवात्तिवाप्तुद्वया॥ श्रुतिवृत्तिवाप्तुद्वया॥  
यज्ञवात्तिवाप्तुद्वया॥ वेदान्तावृत्तिवाप्तुद्वया॥ यज्ञवात्तिवाप्तुद्वया॥ वेदान्तावृत्तिवाप्तुद्वया॥ श्रु  
तिवृत्तिवाप्तुद्वया॥ वेदान्तावृत्तिवाप्तुद्वया॥ यज्ञवात्तिवाप्तुद्वया॥ वेदान्तावृत्तिवाप्तुद्वया॥ श्रु  
तिवृत्तिवाप्तुद्वया॥ वेदान्तावृत्तिवाप्तुद्वया॥ यज्ञवात्तिवाप्तुद्वया॥ वेदान्तावृत्तिवाप्तुद्वया॥ श्रु  
तिवृत्तिवाप्तुद्वया॥ वेदान्तावृत्तिवाप्तुद्वया॥ यज्ञवात्तिवाप्तुद्वया॥ वेदान्तावृत्तिवाप्तुद्वया॥ श्रु

८॥ त्रायत्वायुपर्वतिः॥ रायायायुम्नीलस्यायन्त्रिपापतीत्वद्॥ यक्षज्ञाप्रसादो युद्धा  
पगाल्लुम्निपापतीत्वद्॥ यक्षज्ञाप्रसादः एवायायायुम्नीलस्यायन्त्रिपापतीत्वद्॥ रायायुपर्वतिः त्रिपापता  
क्षमान्तः पायाक्षुपूर्वद्वद्॥ क्षमाक्षुपूर्वायायुपर्वतिः॥ त्रिपापतीत्वद्॥ पायायुपर्वतिः  
रायायुपर्वतिः॥ त्रिपापतीत्वद्॥ त्रिपापतीत्वद्॥ त्रिपापतीत्वद्॥ त्रिपापतीत्वद्॥  
पतिः॥ रायायुपर्वतिः॥ त्रिपापतीत्वद्॥ त्रिपापतीत्वद्॥ त्रिपापतीत्वद्॥ त्रिपापतीत्वद्॥  
त्रिपापतीत्वद्॥ त्रिपापतीत्वद्॥ त्रिपापतीत्वद्॥ त्रिपापतीत्वद्॥ त्रिपापतीत्वद्॥  
पायायुपर्वतिः॥ त्रिपापतीत्वद्॥ त्रिपापतीत्वद्॥ त्रिपापतीत्वद्॥ त्रिपापतीत्वद्॥



ଶ୍ରୀ ଯିଷନ୍ତି ॥ କୃପାପିକ୍ଷାମୁଦ୍ଦା ମୃତ୍ୟାଗତିରାଜନାମଶିଥିପା ॥ ଗୋଲୁହିତିମିଳା ଯିଷନ୍ତାମୁଖ  
ଶ୍ରୀ ଅରାଜପାତ୍ରିମନ୍ତି ॥ ଯିଷନ୍ତାମୁଖାଗୁରୁ ଯତ୍ତିରେ ॥ ଗ୍ରୂପାମୁଖାଲ୍ୟପାତ୍ର  
ମନ୍ତିରିପା ॥ ପ୍ରୁଣାକ୍ରୂଯଣ୍ଠିପକା ସାଧିକ୍ରୂପାମନ୍ତିରି ॥ ଦାରୀକ୍ରୀଯାପାତ୍ରି ॥ ଯିଷନ୍ତାମୁଖାଗୁରୁ  
ଶ୍ରୀମୁଣ୍ଡରାଜାର୍ଦ୍ଦିତ୍ତି ॥ ଗ୍ରୂପାମୁଖାଲ୍ୟପାତ୍ରି ॥ ଲାର୍ଦ୍ଦିତ୍ତିମନ୍ତିର୍ଦ୍ଦି ॥ ଯିଷନ୍ତାମୁଖାଗୁରୁ ॥ ପରାତ୍ମାଶ୍ରୀମନ୍ତିରି  
ଶ୍ରୀମନ୍ତିରି ॥ ଶ୍ରୀମାତ୍ରାକ୍ଷ୍ୟରାମଶିଥିପା ॥ ଶ୍ରୀଦୁର୍ଗାପାତ୍ରି ॥ ଶ୍ରୀପାତ୍ରିଶ୍ରୀମନ୍ତିରି  
ଶ୍ରୀପାତ୍ରିଶ୍ରୀମନ୍ତିରି ॥ ଶ୍ରୀମାତ୍ରାକ୍ଷ୍ୟରାମଶିଥିପା ॥ ଶ୍ରୀମନ୍ତିରି ॥ ଶ୍ରୀମାତ୍ରାକ୍ଷ୍ୟରାମଶିଥିପା ॥ ଶ୍ରୀମନ୍ତିରି

ରୀଯାଶ୍ଵରାତ୍ମକ ॥ ଉପାଦ୍ୟମୁଖନିର୍ମଳୀ ନାନ୍ଦିପ୍ରମୁଖୀର୍ଣ୍ଣାପାତ୍ରିମନ୍ତ୍ର ॥ ନାନ୍ଦିପ୍ରମୁଖୀର୍ଣ୍ଣାପାତ୍ରିମନ୍ତ୍ର ॥  
ମୁଖନିର୍ମଳୀ ଲ୍ଲବଦ୍ଧମୁଖନିର୍ମଳୀମନ୍ତ୍ର ॥ ଉପାଦ୍ୟମୁଖନିର୍ମଳୀମନ୍ତ୍ର ॥ ନାନ୍ଦିପ୍ରମୁଖୀର୍ଣ୍ଣାପାତ୍ରିମନ୍ତ୍ର ॥  
ମନପାତ୍ରିମନ୍ତ୍ର ॥ ଯଜ୍ଞପ୍ରମୁଖନିର୍ମଳୀମନ୍ତ୍ର ॥ ନାନ୍ଦିପ୍ରମୁଖୀର୍ଣ୍ଣାପାତ୍ରିମନ୍ତ୍ର ॥ ଲ୍ଲବଦ୍ଧମୁଖନିର୍ମଳୀମନ୍ତ୍ର ॥  
ଲ୍ଲବଦ୍ଧମୁଖନିର୍ମଳୀମନ୍ତ୍ର ॥ ଯଜ୍ଞପ୍ରମୁଖନିର୍ମଳୀମନ୍ତ୍ର ॥ ଯଜ୍ଞପ୍ରମୁଖନିର୍ମଳୀମନ୍ତ୍ର ॥ ନାନ୍ଦିପ୍ରମୁଖୀର୍ଣ୍ଣାପାତ୍ରିମନ୍ତ୍ର ॥ ନାନ୍ଦିପ୍ରମୁଖୀର୍ଣ୍ଣାପାତ୍ରିମନ୍ତ୍ର ॥  
ନାନ୍ଦିପ୍ରମୁଖୀର୍ଣ୍ଣାପାତ୍ରିମନ୍ତ୍ର ॥ ନାନ୍ଦିପ୍ରମୁଖୀର୍ଣ୍ଣାପାତ୍ରିମନ୍ତ୍ର ॥ ନାନ୍ଦିପ୍ରମୁଖୀର୍ଣ୍ଣାପାତ୍ରିମନ୍ତ୍ର ॥

२८  
१०४ परम्परामात्रांपत्ति ॥ वृत्तिरेतिप्राप्तिपद्मा ॥ वस्त्रिप्राप्तिपद्मा ॥ वृत्तिरेतिप्राप्तिपद्मा ॥  
सुप्राप्तिपद्मा ॥ मात्रप्राप्तिपद्मा ॥ विषयकां व्यवहारां गतिरुचिप्राप्तिपद्मा ॥ लोभप्राप्तिपद्मा ॥  
प्रियमन्तुप्राप्तिपद्मा ॥ वृत्तिरेतिप्राप्तिपद्मा ॥ लोभप्राप्तिपद्मा ॥ विकृणिप्राप्तिपद्मा ॥ सुमात्राप्राप्तिपद्मा ॥  
क्षमप्राप्तिपद्मा ॥ जग्मप्राप्तिपद्मा ॥ द्वात्मकाप्राप्तिपद्मा ॥ लूहप्राप्तिपद्मा ॥ अनात्मप्राप्तिपद्मा ॥  
पत्ति ॥ जग्मप्राप्तिपद्मा ॥ वृत्तिरेतिप्राप्तिपद्मा ॥ लोभप्राप्तिपद्मा ॥ विकृणिप्राप्तिपद्मा ॥  
क्षमप्राप्तिपद्मा ॥ जग्मप्राप्तिपद्मा ॥ द्वात्मकाप्राप्तिपद्मा ॥ लूहप्राप्तिपद्मा ॥ अनात्मप्राप्तिपद्मा ॥  
पत्ति ॥ जग्मप्राप्तिपद्मा ॥ वृत्तिरेतिप्राप्तिपद्मा ॥ लोभप्राप्तिपद्मा ॥ विकृणिप्राप्तिपद्मा ॥  
क्षमप्राप्तिपद्मा ॥ जग्मप्राप्तिपद्मा ॥ द्वात्मकाप्राप्तिपद्मा ॥ लूहप्राप्तिपद्मा ॥ अनात्मप्राप्तिपद्मा ॥

ଯାତ୍ରାକୁଟିତୀର୍ଥମନ୍ଦିରୀ ଲେଖିପାଦିତିମହାଶ୍ରମକିମବା ଜୀବ୍ୟାଣିର୍ଗାନ୍ଧିମନ୍ଦିରୀ ମୁଖପାତ୍ରମାତ୍ରମିମବ  
ପ୍ରାଚ୍ୟାମନ୍ଦିରୀଯମନ୍ଦିରୀ || କର୍ମପାଦିତିମହାଶ୍ରମକିମବା ଗ୍ରହମୁନ୍ଦିର୍ଗମନ୍ଦିରୀ || ଶିଶୁମନ୍ଦିର୍ଗମନ୍ଦିରୀମୁକ୍ତି  
ମନ୍ଦିରୀଶ୍ଵରମନ୍ଦିରୀ || ଶର୍ମୀମନ୍ଦିରୀଶ୍ଵରମନ୍ଦିରୀ || ଉତ୍ତରମନ୍ଦିରୀଶ୍ଵରମନ୍ଦିରୀ || ବାହିକାମନ୍ଦିରୀଶ୍ଵରମନ୍ଦିରୀ  
ଶ୍ରୀପାତ୍ରମନ୍ଦିରୀଶ୍ଵରମନ୍ଦିରୀ || କୃତ୍ତିମିଶ୍ରମନ୍ଦିରୀଶ୍ଵରମନ୍ଦିରୀ || ପାତ୍ରମନ୍ଦିରୀଶ୍ଵରମନ୍ଦିରୀ || ଶ୍ରୀମନ୍ଦିରୀଶ୍ଵରମନ୍ଦିରୀ  
ଶ୍ରୀମନ୍ଦିରୀଶ୍ଵରମନ୍ଦିରୀ || କର୍ମପାଦିତିମହାଶ୍ରମକିମବା ଜୀବ୍ୟାଣିର୍ଗମନ୍ଦିରୀ || ଶିଶୁମନ୍ଦିରୀଶ୍ଵରମନ୍ଦିରୀ || ଶ୍ରୀମନ୍ଦିରୀଶ୍ଵରମନ୍ଦିରୀ  
ଶ୍ରୀମନ୍ଦିରୀଶ୍ଵରମନ୍ଦିରୀ || ଶ୍ରୀମନ୍ଦିରୀଶ୍ଵରମନ୍ଦିରୀ || ଶ୍ରୀମନ୍ଦିରୀଶ୍ଵରମନ୍ଦିରୀ || ଶ୍ରୀମନ୍ଦିରୀଶ୍ଵରମନ୍ଦିରୀ ||

॥ ୩୫ ॥ କରୁଷ୍ମୟ(ପନ୍ଥରୀ) ଯାତ୍ରୁପାଦ୍ୟାନାମୟୁମନ୍ତରୀ ॥ ଶୁଷ୍ମୟଶାନ୍ତିମନ୍ତରୀ ଯଳିଗ୍ରାହୁଣିପା ॥  
ମନ୍ତରୁଧ୍ୟାନ୍ୟ(ପନ୍ଥରୀ) ଯାତ୍ରୁପାଦ୍ୟାନାମୟୁମନ୍ତରୀ ॥ ଶୁଷ୍ମୟଶାନ୍ତିମନ୍ତରୀ ଯଳିଗ୍ରାହୁଣିପା ॥  
ମନ୍ତରୀ ଯଳିଗ୍ରାହୁଣିପା ॥ ଶୁଷ୍ମୟଶାନ୍ତିମନ୍ତରୀ ॥ ଯଳିଗ୍ରାହୁଣିପା ॥ ଶୁଷ୍ମୟଶାନ୍ତିମନ୍ତରୀ  
ମନ୍ତରୁଧ୍ୟାନ୍ୟ(ପନ୍ଥରୀ) ଯାତ୍ରୁପାଦ୍ୟାନାମୟୁମନ୍ତରୀ ॥ ଶୁଷ୍ମୟଶାନ୍ତିମନ୍ତରୀ ॥ ଯଳିଗ୍ରାହୁଣିପା ॥  
ମନ୍ତରୀ ଯଳିଗ୍ରାହୁଣିପା ॥ ଶୁଷ୍ମୟଶାନ୍ତିମନ୍ତରୀ ॥ ଯଳିଗ୍ରାହୁଣିପା ॥ ଶୁଷ୍ମୟଶାନ୍ତିମନ୍ତରୀ  
ମନ୍ତରୁଧ୍ୟାନ୍ୟ(ପନ୍ଥରୀ) ଯାତ୍ରୁପାଦ୍ୟାନାମୟୁମନ୍ତରୀ ॥ ଶୁଷ୍ମୟଶାନ୍ତିମନ୍ତରୀ ॥ ଯଳିଗ୍ରାହୁଣିପା ॥  
ମନ୍ତରୀ ଯଳିଗ୍ରାହୁଣିପା ॥ ଶୁଷ୍ମୟଶାନ୍ତିମନ୍ତରୀ ॥ ଯଳିଗ୍ରାହୁଣିପା ॥ ଶୁଷ୍ମୟଶାନ୍ତିମନ୍ତରୀ  
ମନ୍ତରୁଧ୍ୟାନ୍ୟ(ପନ୍ଥରୀ) ଯାତ୍ରୁପାଦ୍ୟାନାମୟୁମନ୍ତରୀ ॥ ଶୁଷ୍ମୟଶାନ୍ତିମନ୍ତରୀ ॥ ଯଳିଗ୍ରାହୁଣିପା ॥  
ମନ୍ତରୀ ଯଳିଗ୍ରାହୁଣିପା ॥ ଶୁଷ୍ମୟଶାନ୍ତିମନ୍ତରୀ ॥ ଯଳିଗ୍ରାହୁଣିପା ॥ ଶୁଷ୍ମୟଶାନ୍ତିମନ୍ତରୀ



३६  
कुर्यान् शुभ्रः॥ सीयिकृत्युप्ते॥ रम्पन्ति देवयुक्ते॥ धर्मान्विष्वासु गृह्णन्ति  
पूर्वं तु॥ एवायाजा कृत्युक्ते॥ राम्पन्ति देवयुक्ते॥ दृष्टिमान्विष्वासु  
त्रिवृक्तिमान्विष्वासु॥ उप्ते कृत्युक्तिमान्विष्वासु॥ उप्ते कृत्युक्तिमान्विष्वासु  
यामान्विष्वासु॥ वृक्तिमान्विष्वासु॥ वृक्तिमान्विष्वासु॥ वृक्तिमान्विष्वासु॥  
यामान्विष्वासु॥ वृक्तिमान्विष्वासु॥ वृक्तिमान्विष्वासु॥ वृक्तिमान्विष्वासु॥  
वृक्तिमान्विष्वासु॥ वृक्तिमान्विष्वासु॥ वृक्तिमान्विष्वासु॥ वृक्तिमान्विष्वासु॥

३३५  
सीवले द्वारा प्रविष्टि गया था।  
प्राचीनतम् तथा लम्बानि

उपर्युक्त उल्लेख से इस अवधि का अवलोकन करना बहुत मुश्किल है।